पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.10.2024 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9810117464 पर एस.एम.एस कर दें या 9868051444 पर googlepay कर दें। –अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-09 आश्विन-2081 दयानन्दाब्द 201 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2024 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.10.2024, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

धर्म रक्षा एवं जनकल्याण महायज्ञ हर्षोल्लास से सम्पन्न

यज्ञ और योग समाज को जोड़ते हैं –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

गाजियाबाद,रविवार दिनांक 22 सितम्बर 2024 को वृंदावन ग्रीन सोसायटी एवं आर्य समाज वृंदावन गार्डन के संयुक्त तत्वावधान में 11 कुण्डीय धर्म रक्षा एवम् जन कल्याण महायज्ञ स्वामी यज्ञ देव (यज्ञ विभाग प्रमुख पतंजलि योगपीठ हरिद्वार) के सानिध्य में एवं पंडित कुलदीप विद्यार्थी के ब्रह्मत्व में हर्षोल्लास से वृन्दावन ग्रीन सोसाईटी राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद में संपन्न हुआ।उन्होंने यज्ञोपरांत यज्ञमानों को आशीर्वाद प्रदान कर उनके सुखद जीवन की प्रभु से प्रार्थना की।स्वामी यज्ञ देव ने यज्ञ की महत्ता पर विस्तृत प्रकाश डाला। मुख्य यज्ञमान श्रीमती अमिता आर्या एवं देवेन्द्र आर्य,बबीता रानी एवं नीरज कुमार,पूनम शर्मा एवं दिनेश शर्मा, वंदना आर्या एवं विक्रांत आर्य सहित 44 यज्ञमानों ने भाग लिया। भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक व शुद्धि यज्ञ के प्रणेता कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर) एवम् ब्रह्मचारिणी स्वर कोकिला छवि आर्या,महाशय जगमाल,विजेन्द्र आर्य के भजनों को सुनकर श्रोता झूम उठे। मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि यज्ञ और योग समाज को जोड़ने का काम करते हैं क्योंकि दोनों ही सभी को समान रूप से लाभ देते हैं।यज्ञ जहां वायु मंडल शुद्ध करता है साथ ऊपर उठती अग्नि जीवन में ऊपर उठने की प्रेरणा देती हैप् योग संगति करण जोड़ने का कार्य करता है।आज समाज को जोड़ने की अत्यन्त आवश्यकता है।उन्होंने कहा कि ओ३म् की पावन पताका के नीचे पूरे हिन्दू समाज को संगठित करना आवश्यक है तभी हम राष्ट्र रक्षा कर पायेंगे। इस अवसर पर स्वामी विप्रदेव, देव मुनि,राकेश आर्य,महेन्द्र सिंह आर्य,काव्यत्री उपासना,आचार्य महेन्द्र भाई,राकेश भटनागर आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। पतंजलि योग पीठ के एनसीआर प्रमुख एसपी सिंह ने कहा कि हम यज्ञ,योग और आयुर्वेद से इलाज करते हैं।जीवन सुधारते हैं।व्यक्ति का आध्यात्मिक निर्माण आवश्यक है।योग से आत्मा और परमात्मा का मिलन संभव है। संयोजक ज्ञानेन्द्र सिंह (पूर्व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश) ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद व्यक्त किया। जिला मंत्री सुरेश आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश,संस्कार विधि एवं व्यवहार भानु आदि पुस्तकों का निरूशुल्क वितरण किया। निगम पार्षद प्रबोध राघव, विजेन्द्र बढाना,रविन्द्र भाटी,राम विलास बंसल एवं मंडल अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार ने पधार कर समारोह की शोभा को बढ़ाया। इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री ओम पाल शास्त्री,प्रमोद चौधरी,सत्यपाल आर्य,दिनेश शर्मा, सुमन मिश्रा,कविता राठी,पंकज सक्सेना, सोभित मिश्रा, रोहित रिक्कु अशोक शर्मा, अमित मिश्रा, विनोद जाडू, सुरेश आर्य,यज्ञवीर चौहान, त्रिलोक शास्त्री,डा प्रमोद सक्सैना, चौधरी मंगल सिंह एवं प्रवीण आर्य आदि मौजूद रहे। मंच का कुशल संचालन निरंजन आर्य टीला ने किया। शांतिपाठ एवं प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक सम्पन्न

शनिवार 21 सितम्बर 2024, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक मुख्यालय दयानन्द भवन आसिफ़ अली रोड नई दिल्ली में संपन्न हुई। सभा प्रधान स्वामी आर्य वेश जी ने वेद प्रचार कार्य को गति देने का आह्वान किया तथा फरवरी में दिल्ली विशाल आर्य महा सम्मेलन आयोजित करने की घोषणा की। सभा मंत्री प्रो. विठ्ठल राव ने संचालन किया। सभा उपप्रधान अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, रामकुमार आर्य आदि सम्मिलित हुए।

भारत भाग्य विधाता ऋषि दयानन्द

— मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द जी का बलिदान 141 वर्ष पूर्व हुआ था। इस अवधि में उनके अनुयायियों एवं आर्यसमाज ने अनेक कार्य किये हैं जिनसे समाज एवं राष्ट्र को लाभ पहुंचा है। ऋषि दयानन्द को हम इसलिये भी स्मरण करते हैं कि उन्होंने हमें असत्य का परिचय कराकर सत्य ज्ञान, सत्य सिद्धान्त व सत्य मान्यताओं सहित जीवन को श्रेष्ठ व सफल बनाने वाले कर्तव्यों व अनुष्ठानों से परिचित कराया था। एक बार उनके समय के भारत की स्थिति पर विचार कर लेना उचित होगा। प्रथम बात यह है कि ऋषि दयानन्द के कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होने से पूर्व देश घोर अविद्या व अन्धविश्वासों से ग्रस्त था। ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप से वह अपरिचित हो गया था। जब ईश्वर का सत्यस्वरूप ही लोगों को पता नहीं था तो सत्य उपासना भी वह नहीं जान सकते थे। देश भर में अविद्या पर आधारित मिथ्या परम्परायें प्रचलित थीं जिनसे हमारा देश व समाज दिन प्रतिदिन निर्बल व रूग्ण हो रहा था। महर्षि दयानन्द के समय में देश अंग्रेजों का गुलाम था। इससे पूर्व यह यवनों वा मुसलमानों का गुलाम रहा। सबने इसका शोषण किया और अमानवीय अत्याचार करने के साथ धर्मान्तरण वा मतान्तरण किया। इस गुलामी का कारण भी अविद्या ही मुख्य था। इस गुलामी के कारण वैदिक धर्म व संस्कृति मिट रही थी और ईसाईयत एवं अन्य कुछ मतों का प्रचार व प्रसार वृद्धि को प्राप्त हो रहा था। इन विपरीत परिस्थितियों में देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने का दायित्व ऋषि दयानन्द ने अपने ऊपर लिया और प्रथम उपाय के रूप में वेद, धर्म और संस्कृति का प्रचार आरम्भ किया। वह असत्य व मिथ्या मत एवं उनकी मान्यताओं का खण्डन करने सहित विद्या की बातों, सत्य सिद्धान्तों एवं वैदिक मान्यताओं का मण्डन करते थे। हरिद्वार के कुम्भ के मेले में भी उन्होंने पाखण्डों का खण्डन किया था और हरिद्वार में पाखण्ड खण्डिनी पताका भी फहराई थी। पौराणिक नगरी काशी में जाकर उन्होंने वहां भी पाखण्ड एवं मूर्तिपूजा आदि मिथ्या अवैदिक मान्यताओं का खण्डन किया था। इससे मिथ्या मतों के आचार्यों में खलबली मच गई थी परन्तु सभी मिथ्या मतों के आचार्यों में इतनी योग्यता नहीं थी कि वह सत्य को स्वीकार करें अथवा ऋषि दयानन्द की मान्यताओं को असत्य व वेद विरुद्ध सिद्ध करें। इसका परिणाम सन् 16 नवम्बर, 1869 को मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ के रूप में सम्मुख आया। पौराणिक आचार्यों के रूप में लगभग 27 से अधिक काशी के शीर्ष आचार्यों ने अकेले स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ किया। यह सभी आचार्य मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि के समर्थन में वेद का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके। स्वामी दयानन्द जी का प्रचार जारी रहा। वह देश के अनेक राज्यों वा उनके नगरों में जाकर वेदों का प्रचार करने लगे। सर्वत्र लोग उनके शिष्य बनने लगे। शिष्यों में अधिक संख्या पठित, शिक्षित व ज्ञानी लोगों की हुआ करती थी। सन् 1875 के अप्रैल महीने की 10 तारीख को लोगों के आग्रह पर स्वामी दयानन्द जी ने मुम्बई नगरी के गिरिगांव मुहल्ले में आर्यसमाज की स्थापना की। यह आर्यसमाज काकड़वाडी नाम से प्रसिद्ध है। आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य वेद और वेदानुकूल सिद्धान्तों एवं मान्यताओं सहित वैदिक जीवन शैली का प्रचार तथा पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों सहित मिथ्या व अवैदिक सामाजिक परम्पराओं का उन्मूलन करना था।

स्वामी दयानन्द जी मनुष्यों के भोजन पर भी ध्यान देते थे। वह शुद्ध अन्न से बने भोजन को करने के ही समर्थक थे। मांसाहार, मदिरापान, अण्डे व मछली आदि का सेवन तथा धूम्रपान आदि को वह धर्म की दृष्टि से अनुचित तथा आत्मा को दूषित करने वाला मानते थे। देश को जातिवाद से मुक्त करने का भी स्वामी जी ने प्रयत्न किया। उन्होंने वैदिक काल में प्रचलित वैदिक वर्णव्यवस्था, जो गुण कर्म व स्वभाव पर आधारित थी, उसके सत्यस्वरूप को देश व समाज के सामने रखा। देश के पतन का मुख्य कारण अज्ञान व अन्धविश्वास ही थे। स्वामी जी ने अज्ञानता व अशिक्षा दूर करने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया और उस पर विस्तार से चिन्तन प्रस्तुत किया। इसी का परिणाम कालान्तर में गुरुकुल एवं दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज व स्कूलों की स्थापना के रूप में सामने आया। भारत के शिक्षा जगत में यह एक प्रकार की क्रान्ति थी। हमारे पौराणिक भाई नारी शिक्षा का विरोध करते थे। ऋषि दयानन्द ने नारी शिक्षा की वकालत की और बताया कि नारी को वेदों के अध्ययन सहित सभी विद्यायें प्राप्त करने का अधिकार है। इसके साथ ही युवक एवं युवती का विवाह गुण, कर्म व स्वभाव की समानता से करने का उन्होंने समर्थन किया था। उनका सन्देश है कि नारी का भी पुरुष के समान शिक्षित व विदुषी होना आवश्यक है। नारी यदि शिक्षित होगी तभी उसकी सन्तानें भी शिक्षित व संस्कारित हो सकेंगी। समाज ने ऋषि दयानन्द के इस विचार को अपनाया जिसका परिणाम हम आज देख रहे हैं कि शिक्षा जगत् में नारियों की उपलब्धियां पुरुष वर्ग से अधिक देखने को मिलती है। स्वामी दयानन्द जी ने समाज सुधार का जो कार्य किया वह एकांगी न होकर सर्वांगीण था। स्वामी ऋषि दयानन्द नारी को संस्कारित कर वेद विदुषी बनाना चाहते थे। बहुत सी नारियां वेद विदुषी बनीं और आज भी गुरुकुलों का संचालन कर रही हैं। इसके विपरीत पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के प्रभाव में विवेक के अभाव में बहुत सी नारियों ने वैदिक धर्म व शिक्षाओं सहित भारतीयता की उपेक्षा कर पाश्चात्य नारी के स्वरूप को ग्रहण कर लिया है जहां मनुष्य की भौतिक उन्नति तो कुछ–कुछ होती दिखाई देती हैं परन्तु आध्यात्मिक उन्नति प्रायः शून्य ही होती है जिसका परिणाम जन्म–जन्मान्तरों में दुःख के सिवा और कुछ नहीं होता है। यह भी बता दें कि ऋषि दयानन्द जी और उनके अनुयायियों वा आर्यसमाज ने जन्मना जातिवाद को समाप्त करने के क्षेत्र सहित दलितोद्धार का भी महान कार्य किया है।

अज्ञान व अन्धविश्वास सहित पाखण्डों का खण्डन करते हुए ऋषि दयानन्द जी ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जन्मना जातिवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, अज्ञान व अविद्या के सभी कार्यों का खण्डन किया। स्वामी जी ने विद्या का प्रचार व प्रसार करने के लिये सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद–यजुर्वेद का संस्कृत–हिन्दी भाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिससे देश में अविद्या का प्रभाव व प्रसार कम होकर विद्या का प्रसार न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी हुआ। ऋषि दयानन्द जी ने अविद्या को दूर करने व सर्वत्र वैदिक मान्यताओं के अनुसार समाज व परिवार बनाने के लिये आर्यसमाज की इकाईयों की स्थापनायें की। सर्वत्र साप्ताहिक सत्संग होने लगे जहां प्रातः यज्ञ–अग्निहोत्र, ईश्वर भक्ति के गीत व भजन तथा विद्वानों के ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का प्रचार, समाजोत्थान व देशोत्थान की प्रेरणा, मिथ्या मान्यताओं का खण्डन एवं सत्य सिद्धान्तों का मण्डन व प्रचार होता था। ऋषि दयानन्द ने पूरे विश्व को सर्वोत्तम व श्रेष्ठतम् उपासना पद्धति भी दी है या यह कह सकते हैं कि वैदिक काल में योग की रीति से जो उपासना की जाती थी, उसका उन्होंने पुनरुद्धार किया। सन्ध्या में किन मन्त्रों से व किस विधि से उपासना की जाये, इस पर न केवल चारों वेदों के चुने हुए मन्त्रों से संकलित उपासना की विधि बताई अपितु अपने सभी ग्रन्थों में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना पर व्यापक रूप से प्रकाश भी डाला।

आध्यात्म व सामाजिक जगत् के उन्नयन व उत्कर्ष का ऐसा कोई कार्य व उपाय नहीं था जिसका उल्लेख ऋषि दयानन्द जी ने न किया हो व जिसको प्रचलित करने के लिए उन्होंने व उनके अनुयायियों ने कार्य न किया हो। ऋषि दयानन्द जी ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज्य प्राप्ति का उद्घोष अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया था। ऐसा अनुमान है कि सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के ग्यारहवें समुल्लास में अंग्रेजों का तीव्र शब्दों में विरोध ही उनकी मृत्यु के षडयन्त्र का एक कारण बना था। इसकी विस्तार से चर्चा न कर हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि वह सत्यार्थप्रकाश का आठवां समुल्लास व ग्यारहवें समुल्लास सहित आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध एवं व्यवहारभानु आदि सभी ग्रन्थों को पढ़े। हिन्दी को देश की व्यवहार व राजकाज की भाषा बनाने और गोवध बन्द करने के लिये भी ऋषि दयानन्द ने अंग्रेजों की गुलामी के दिनों में अग्रणीय भूमिका निभाई थी। जिन दिनों ऋषि दयानन्द यह कार्य कर रहे थे तब गांधी जी बच्चे थे और अन्य बड़े राजनीतिक नेताओं का जन्म भी नहीं हुआ था। कांग्रेस की स्थापना भी ऋषि दयानन्द की मृत्यु के लगभग 2 वर्ष बाद हुई थी। देश की आजादी के क्रान्तिकारी व अहिंसक

(शेष पृष्ठ 3 पर)

आर्य नेता ओम सपरा का जन्मोत्सव सम्पन्न

समाज के प्रति समर्पित है ओम सपरा –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 29 सितम्बर 2024, पूर्व मेट्रो पोलटन मैजिस्ट्रेट व सहायक लेबर कमिश्नर दिल्ली ओम सपरा का 72वाँ जन्मोत्सव ललित कला अकादमी, मंडी हाउस, नई दिल्ली में सौल्लास मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आदिश अग्रवाल (अध्यक्ष, इंटरनेशनल कौन्सिल ऑफ जुरिसट लंदन) ने की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि ओम सपरा का जीवन समाज के लिए समर्पित रहा है, आप उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के अध्यक्ष हैं, मित्र संगम पत्रिका के संपादक हैं, लेखक, साहित्यकार, कवि भी हैं। वैदिक विषयों पर अच्छी पकड़ हैं लेबर ला पर सेमीनार भी लेते हैं। महर्षि दयानन्द के अनुयायी हैं , यज्ञ के प्रति आस्था वान है। आपके स्वस्थ व दीर्घ आयु की हम कामना करते हैं। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर चित्र प्रदर्शनी भी लगाई गई है। कवि हरभजन सिंह देयोल, जयदेव शर्मा जयपुर, प्रो. कुलदीप सलिल, सुरेश शुक्ल नार्वे, सुधाकर पाठक, आस्था आर्य , अल्का आर्य (निदेशक डीडीए) आदि ने काव्य पाठ किया। पिंकी आर्य के गीतों ने माहौल खुशनुमा कर दिया। प्रमुख रूप से प्रमोद सपरा, भारत भूषण धूपर आदि उपस्थित थे।

आचार्य कृष्ण प्रसाद कौटिल्य प्रधान निर्वाचित व तहसील कोट कटटु बिरादरी का उत्सव सम्पन्न

रविवार 29 सितम्बर 2024 , झारखंड आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन डॉ. देवचंद्र मिश्रा की अध्यक्षता में आर्य समाज स्वामी श्रद्धानंद मार्ग रांची में संपन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से आचार्य कृष्ण प्रसाद कौटिल्य प्रधान चुने गए। श्री पूर्ण चंद्र आर्य सभा मंत्री व जीवन गोप कोषाध्यक्ष चुने गए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की और से नई टीम कुछ हार्दिक बधाई–अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में रविवार 29 सितम्बर 2024, तहसील कोट कटटु बिरादरी का वार्षिक उत्सव रानी बाग दिल्ली में संपन्न हुआ परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। अभिनंदन करते सुरेश आर्य, नरेंद्र मदान, मदन खुराना आदि।

राष्ट्रीय कवि मनीषी का अभिनंदन व गुरुकुल कुरुक्षेत्र को बधाई

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 46वे राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय कवि प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी का अभिनंदन करते परिषद के अधिकारी। द्वितीय चित्र में हरियाणा के गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 56 विद्यार्थियों ने एन डी ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। केंद्रीय आर्य युवक परिषद की और से हार्दिक शुभकामनायें।

(पृष्ठ 2 का शेष)

आन्दोलनों में भाग लेने वालों में आर्यसमाज के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक थी। अंग्रेज भी इस तथ्य से परिचित थे और इसी कारण उन्होंने पटियाला के आर्यसमाज व अन्यत्र भी आर्यसमाज के सदस्यों के उत्पीड़न के कार्य किये। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह आदि ऋषि दयानन्द के समर्पित अनुयायी थे जिन्होंने देश की आजादी के लिए संघर्ष किया व लोगों को इस कार्य के लिए तैयार किया। देश से स्त्री व पुरुषों की अशिक्षा को दूर कर शिक्षा का प्रचार व प्रसार करने में आर्यसमाज की अग्रणीय एवं प्रमुख भूमिका रही है। स्वधर्म एवं स्वसंस्कृति का बोध एवं प्रचार में भी आर्यसमाज का योगदान प्रमुख एवं सर्वाधिक है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां स्वामी दयानन्द ने अपना बौद्धिक योगदान न किया हो। स्वामी दयानन्द जी वस्तुतः विश्व गुरु थे। इसके साथ ही वह भारत के निर्माता और भाग्य विधाता भी सिद्ध होते हैं। हम ऋषि दयानन्द की महान पावन आत्मा को स्मरण करते हैं। उनकी सभी शिक्षायें आज भी प्रासंगिक हैं। उनके बताये मार्ग पर चल कर ही समाज व विश्व में शान्ति उत्पन्न हो सकती है। आज देश के सामने अनेक चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों को परास्त करने के लिये सभी ऋषि दयानन्द के भक्तों को आलस्य का त्याग कर वेद प्रचार को जन–जन और घर–घर तक पहुंचाना होगा। सत्य के प्रचार में ईश्वर हमारा सहायक होगा और हमें सफलता अवश्य मिलेगी इस धारणा को मन व आत्मा में भरकर हमें वेदप्रचार के कार्यो को करना चाहिए।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001,फोनः 09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 672वां वेबिनार सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

दशहरा को 'वीर पर्व' के रूप में मनाए –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बुधवार 25 सितम्बर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक ऑनलाइन संपन्न हुई। बैठक में सभी शाखाओं में दशहरा पर्व को 'वीर पर्व' के रूप में आयोजित करने का निश्चय हुआ। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने सभी प्रांतों, जिला व शाखा स्तर पर दशहरा के अवकाश में वीर पर्व मनाने का आह्वान किया। सभी स्थानों पर सामुहिक एकत्रीकरण, खेल कूद प्रतियोगिताएं, भाषण, संगीत व शस्त्र पूजन के कार्यक्रम आयोजित करे। यह पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है और हिंदू समाज इसे उत्साहपूर्ण मनाता भी है सभी को जात पात, प्रांत वाद से ऊपर उठकर हिंदू समाज को संगठित व जागरूक करने का कार्य करना चाहिए। राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई ने भी इस अभियान को सफल बनाने का आह्वान किया। परिषद के उत्तर प्रदेश प्रान्तीय अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि हम पूरे प्रदेश में कई कार्यक्रम आयोजित करेंगे। राष्ट्रीय मंत्री देवेन्द्र भगत ने बताया कि आगामी 10 नवम्बर को 141वा महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान दिवस आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार दिल्ली में मनाया जाएगा। प्रमुख रूप से धर्मपाल आर्य, दुर्गेश आर्य, सुधीर बंसल, कुसुम भंडारी, सुरेश आर्य, सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य, वीरेंद्र आहूजा, आस्था आर्य आदि ने अपने विचार रखे और अभियान को सफल बनाने का निश्चय किया।

'राम चरित मानस के वैदिक संदेश' गोष्ठी सम्पन्न

रामचरितमानस सनातन का आधार है– आर्य रवि देव

सोमवार ,23 सितम्बर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'रामचरितमानस का वैदिक संदेश' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। य़ह करोना काल से 672 वाँ वेबिनार था। वैदिक विद्वान आर्य रवि देव ने कहा कि राम चरित मानस सनातन का आधार है यदि सब इसको स्वीकार कर ले तो पौराणिक व आर्य समाजी का भेद समाप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा कि हम राम राज्य की बात करते हैं कि वहां सभी लोग सुखी हैं क्योंकि वहां व्यवस्था गुण के अनुसार हैं। आज लोग वेद मार्ग छोडकर वाम मार्ग अपना रहे हैं इसलिए कष्ट पा रहे हैं। वेदों के लुप्त होने से लोग पाखंड अन्धविश्वास में फंस कर दुःख पा रहे हैं। रामायण इतिहास है और मानस एक भक्ति काव्य है। अध्यक्षता करते हुए आर्य नेता राजेश मेहन्दीरता ने भी चौपाये सुनाकर आनन्दित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने संचालन करते हुए श्री राम के आदर्शों को जीवन में अपनाने पर बल दिया। प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, कौशल्या अरोड़ा, ललिता धवन, मधु खेड़ा, जनक अरोड़ा, सुधीर बंसल आदि के मधुर भजन हुए।

सादर निमंत्रण! **सादर निमंत्रण!** **सादर निमंत्रण!**

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में

141वें महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर

"भव्य संगीत संध्या"

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

गायक कलाकारः–

नरेंद्र आर्य 'सुमन' प्रवीण आर्य पिंकी सुदेश आर्या

कार्यक्रमः रविवार 10 नवम्बर 2024, शाम 4.00 से 7.30 बजे तक

स्थानः आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार, क्लब रोड, दिल्ली–110026

ऋषि लंगर रात्रि 7.30 बजे

विशेष आकर्षण– "आर्य महिला रत्न अवार्ड"

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महासचिव **अनिल आर्य, संयोजक (9868051444)** **धर्मपाल आर्य, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष**

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970